IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नानाजी देशमुख और ग्राम स्वराज: गांधीवादी विचारधारा का आधुनिक पुनर्पाठ

परमानन्द मिश्र[1], प्रोफेसर प्रीति त्रिवेदी[2]

[1]शोध छात्र, इतिहास विभाग, आचार्य नरेन्द्र देव नगर निगम महिला महाविद्यालय, कानपुर

[2]प्रोफेसर, इतिहास विभाग, आचार्य नरेन्द्र देव नगर निगम महिला महाविद्यालय, कानपुर

प्रस्तावना

शीर्षक का यह अध्ययन गांधीवादी विचारधारा और ग्राम स्वराज के आधुनिक संदर्भ में पुनः मूल्यांकन का प्रयास है। नानाजी देशमुख का जीवन और कार्य भारतीय ग्रामीण समाज के सशक्तिकरण के लिए समर्पित रहा है। उन्होंने गांधीजी के स्वराज और स्वनिर्भरता के आदर्श को अपनाते हुए, ग्रामीण विकास के लिए अनेक पहलें कीं। यह शोध दर्शाता है कि कैसे नानाजी का कार्य और विचार आज भी प्रासंगिक हैं, विशेषकर जब भारत में शहरीकरण और औद्योगीकरण की प्रवृत्ति तेज हो रही है। वर्तमान में, जब ग्रामीण भारत को अनेक सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, तो नानाजी के ग्राम स्वराज के विचार हमें आत्मनिर्भरता, सामाजिक समावेशन और स्थानीय स्वशासन के महत्व का स्मरण कराते हैं। यह अध्ययन गांधीवादी मूल्यों जैसे सत्य, अहिंसा, सादगी और समाज सेवा को पुनः जागरूकता के साथ प्रचारित करने की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है। इस तरह, नानाजी का जीवन और विचार हमें आधुनिक भारत में ग्राम विकास के नए मॉडल विकसित करने और ग्रामीण जीवन को सशक्त बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। अंततः, यह शोध गांधीवादी विचारधारा के आधुनिक पुनर्पाठ का एक प्रयास है, जो ग्रामीण भारत की समृद्धि और स्थायी विकास के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: गांधीवादी विचारधारा, नानाजी देशमुख, ग्राम स्वराज, ग्रामीण विकास, आत्मनिर्भरता, स्वशासन, सामाजिक समावेशन, स्थायी विकास, भारतीय ग्रामीण समाज, आधुनिक भारत

परिचय (Introduction)

भारत की स्वतंत्रता संग्राम की वैचारिक नींव महात्मा गांधी की ग्राम स्वराज की अवधारणा पर आधारित थी। गांधीजी का मानना था कि भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है और यदि गाँव सशक्त नहीं होंगे, तो राष्ट्र कभी आत्मनिर्भर नहीं बन सकता। उनके अनुसार ग्राम स्वराज का अर्थ केवल राजनीतिक विकेंद्रीकरण नहीं था, बल्कि आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक और नैतिक रूप से आत्मनिर्भर गाँवों की संरचना थी, जो बाहरी संसाधनों पर न्यूनतम निर्भर हों और अपने निर्णय स्वयं लेने में सक्षम हों (Gandhi, 1946)। गांधीजी ने अपने 'Constructive Programme' में ग्राम स्वराज को व्यवहार में लाने हेतु खादी, ग्रामीण उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता को मुख्य आधार माना था।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में विकास का मॉडल शहरीकरण और केंद्रीकृत योजनाओं पर केंद्रित हो गया, जिससे गाँवों की स्थिति अपेक्षाकृत उपेक्षित रह गई। इसी पृष्ठभूमि में नानाजी देशमुख (1916–2010) का कार्य अत्यंत उल्लेखनीय बनता है। नानाजी देशमुख एक दूरदर्शी समाजसेवी और राष्ट्रसेवक थे जिन्होंने राजनीति से संन्यास लेने के बाद अपना जीवन ग्रामीण पुनर्निर्माण को समर्पित कर दिया। उन्होंने गांधीवादी विचारों को व्यवहार में उतारते हुए "ग्राम स्वराज" की एक नवीन और समसामयिक व्याख्या प्रस्तुत की, जिसे उन्होंने "समग्र ग्राम विकास" की संज्ञा दी (Deshmukh, 2005)। उन्होंने यह सिद्ध किया कि ग्रामीण विकास केवल सरकार के कार्यक्रमों से संभव नहीं, बल्कि जनसहभागिता, शिक्षा और आत्मनिर्भरता के समन्वय से ही संभव है।

नानाजी देशमुख ने चित्रकूट (उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित क्षेत्र) को अपने प्रयोगक्षेत्र के रूप में चुना, जहाँ उन्होंने ग्राम विकास की योजनाओं को लागू कर व्यावहारिक रूप दिया। उन्होंने 1991 में भारत के पहले ग्रामीण विश्वविद्यालय — *चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय* — की स्थापना की, जिसका उद्देश्य ग्रामीण युवाओं को ग्राम विकास में प्रशिक्षित करना था (DRI, 2010)। इसके अतिरिक्त, उन्होंने *दीनदयाल शोध संस्थान* की स्थापना कर ग्राम योजना, स्वास्थ्य, स्वच्छता, जैविक खेती, कुटीर उद्योग और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्रों में कार्य किया।

गांधीजी के विचारों से प्रेरणा लेते हुए नानाजी ने यह स्पष्ट किया कि आत्मनिर्भर ग्राम वही है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्यों के प्रति सजग हो, पंचायतें निर्णय लेने में स्वतंत्र हों, और स्थानीय संसाधनों का सदुपयोग किया जाए (Sharma, 2017)। उनका मानना था कि "गाँव केवल भूगोल नहीं है, वह जीवंत संस्कृति का प्रतीक है", और जब तक ग्रामों का पुनरुत्थान नहीं होगा, तब तक भारत का पुनर्निर्माण असंभव है।

इस शोध-पत्र की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि यह उन वैकल्पिक विकास मॉडलों की पड़ताल करता है जो शहरी केन्द्रीकरण से इतर भारत की बहुसंख्यक ग्रामीण आबादी को केंद्र में रखते हैं। आज जब भारत आत्मनिर्भरता, स्थानीय संसाधनों के उपयोग, और सतत विकास की ओर बढ़ रहा है, तब नानाजी देशमुख का ग्राम स्वराज मॉडल अत्यंत प्रासंगिक हो उठता है। यह शोध प्रयास करेगा कि कैसे गांधीवादी सोच को नानाजी देशमुख ने आधुनिक परिस्थितियों में व्यवहारिक रूप प्रदान किया और एक नया विकास दर्शन रचा।

शोध के उद्देश्य (Objectives):

1. **गांधीवादी ग्राम स्वराज की अवधारणा का सैद्धांतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन करना**, जिससे यह समझा जा सके कि स्वतंत्र भारत में इसे लागू करने के प्रयास किस प्रकार किए गए और वे कहाँ विफल हुए।
2. **नानाजी देशमुख द्वारा प्रस्तावित ग्राम स्वराज के दृष्टिकोण और विकास कार्यक्रमों का विश्लेषण करना**, विशेष रूप से उनके सामाजिक, आर्थिक और आत्मनिर्भरता पर केंद्रित दृष्टिकोण का।
3. **चित्रकूट मॉडल का गहन अध्ययन करना** ताकि यह मूल्यांकन किया जा सके कि यह मॉडल गांधीवादी ग्राम स्वराज के कितने निकट है और उसकी व्यावहारिक उपयोगिता कितनी प्रभावी रही है।
4. **वर्तमान ग्रामीण विकास नीतियों में नानाजी देशमुख की सोच और कार्यों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना**, जिससे यह समझा जा सके कि उनके विचार आज के संदर्भ में कितने उपयोगी और प्रेरणादायक हैं।

साहित्य समीक्षा (Literature Review)

Gandhi, M. K. (1909). गांधीजी की *हिन्द स्वराज* स्वतंत्र भारत में स्वराज की मूल अवधारणा का प्रारंभिक दस्तावेज है। इसमें गांधीजी ने आधुनिकता, औद्योगीकरण, और केंद्रीकृत शासन व्यवस्था की आलोचना की तथा ग्राम आधारित विकेन्द्रित शासन प्रणाली का समर्थन किया। गांधी का मानना था कि भारत का वास्तविक निर्माण गांवों से होगा और जब तक गांव आत्मनिर्भर नहीं बनते, तब तक स्वराज अधूरा रहेगा। यह अवधारणा नानाजी देशमुख के दृष्टिकोण की बुनियाद रही।

Gandhi, M. K. (1945). *The Constructive Programme: Its Meaning and Place* में गांधीजी ने ग्राम स्वराज को व्यवहार में लाने हेतु 18 रचनात्मक कार्यक्रम सुझाए। इनमें ग्रामोद्योग, ग्राम स्वच्छता, अस्पृश्यता निवारण, स्त्री शिक्षा, ग्राम पंचायत आदि शामिल थे। इस कार्यक्रम ने ग्रामीण भारत के सर्वांगीण विकास की रूपरेखा प्रस्तुत की, जिसका प्रभाव नानाजी देशमुख के कार्यक्रमों में स्पष्ट दिखाई देता है।

Deshmukh, N. (1996). नानाजी देशमुख के लेख संग्रह *Rashtra Nirmaan ke Path* में उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है और बिना ग्रामीण उत्थान के राष्ट्रीय प्रगति संभव नहीं है। उन्होंने ग्राम स्वराज को केवल राजनीतिक सत्ता का विकेंद्रीकरण नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक पुनर्निर्माण के रूप में परिभाषित किया।

Deshmukh, N. (2005). *Chitrakoot Experiment* शीर्षक से प्रकाशित उनके व्याख्यानों में चित्रकूट में किए गए सामाजिक प्रयोग का विवरण मिलता है। नानाजी ने ग्रामों में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और आध्यात्मिक चेतना को मिलाकर ग्रामीण पुनर्निर्माण का मॉडल प्रस्तुत किया। उन्होंने युवाओं को तकनीकी प्रशिक्षण और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने पर विशेष बल दिया।

Planning Commission of India (2001). *Report of the Task Force on Rural Development* में यह स्वीकार किया गया कि सरकार की योजनाएं अधिकांशतः 'टॉप-डाउन' दृष्टिकोण पर आधारित हैं, जिससे ग्रामीण समुदाय की सच्ची भागीदारी नहीं हो पाती। इस रिपोर्ट में नानाजी के चित्रकूट मॉडल की सराहना करते हुए उसे जनभागीदारी आधारित विकास का उदाहरण बताया गया।

NITI Aayog (2018). *Strategy for New India @75* दस्तावेज़ में ग्राम स्वराज की गांधीवादी अवधारणा को पुनः रेखांकित किया गया। इसमें यह स्वीकार किया गया कि ग्रामीण भारत की प्रगति के लिए सामुदायिक भागीदारी, लोक प्रबंधन, और पंचायतीराज संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। नानाजी देशमुख के योगदान को इस नीति दस्तावेज में आदर्श रूप में प्रस्तुत किया गया है।

Sharma, R. (2012). अपने शोध लेख *Relevance of Gandhian Model in Modern Rural Governance* में लेखक ने गांधीवादी मॉडल की समकालीन प्रासंगिकता की विवेचना की। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि यदि नानाजी देशमुख जैसे गांधीवादी चिंतकों के दृष्टिकोण को अपनाया जाता, तो ग्रामीण भारत की समस्याएं काफी हद तक सुलझाई जा सकती थीं।

Verma, S. (2017). अपने अध्ययन *Gram Vikas: Ek Atma-Kendrit Drishtikon* में लेखक ने चित्रकूट मॉडल का विस्तृत विश्लेषण किया और पाया कि यह मॉडल केवल भौतिक विकास नहीं, बल्कि ग्रामीण आत्मबल, नैतिकता और सामाजिक समरसता पर आधारित है। इसमें शिक्षा, कृषि, और संस्कृति का संतुलन निहित है।

Kumar, A. (2020). शोध पत्र *Impact of Decentralized Rural Governance in India* में लेखक ने ग्राम पंचायतों की सीमित स्वायत्तता पर प्रकाश डाला और चित्रकूट जैसे मॉडल को नीतिगत सुधारों का आधार बताया। उन्होंने यह निष्कर्ष दिया कि नानाजी देशमुख का दृष्टिकोण भारत के लोकतंत्र को जड़ों तक मजबूत करता है।

Mishra, P. (2021). *Reimagining Rural India through Integral Humanism* में लेखक ने नानाजी देशमुख की विचारधारा को पंडित दीनदयाल उपाध्याय के 'एकात्म मानववाद' से जोड़ा। इस विचारधारा के अंतर्गत विकास को मानव केंद्रित, सांस्कृतिक रूप से जुड़ा और आत्मनिर्भरता आधारित बताया गया है। उन्होंने चित्रकूट प्रयोग को इस दर्शन का व्यावहारिक रूप माना।

शोध पद्धति (Research Methodology)

इस शोध का उद्देश्य स्वतंत्र भारत में ग्राम स्वराज की अवधारणा की विफलता के कारणों को समझना तथा नानाजी देशमुख द्वारा प्रस्तुत वैकल्पिक दृष्टिकोण की प्रभावशीलता का विश्लेषण करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु गुणात्मक (Qualitative) शोध पद्धति को अपनाया गया है, क्योंकि यह दृष्टिकोण विचारों, दृष्टिकोणों, अनुभवों और सामाजिक प्रक्रियाओं के गहन विश्लेषण पर आधारित होता है। इस शोध में प्राथमिक रूप से द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया जाएगा, जिनमें महात्मा गांधी की 'हिन्द स्वराज' और 'Constructive Programme' जैसी मौलिक रचनाएँ, नानाजी देशमुख के लेख, व्याख्यान और उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं की वार्षिक रिपोर्टें प्रमुख रहेंगी। इसके अतिरिक्त योजना आयोग और नीति आयोग के ग्रामीण विकास से संबंधित दस्तावेज, भारत सरकार द्वारा संचालित ग्राम विकास योजनाओं पर आधारित रिपोर्टें, और संबंधित शोध पत्र व पुस्तकें भी अध्ययन का आधार बनेंगी। इन सभी स्रोतों का तुलनात्मक और व्याख्यात्मक पद्धति से विश्लेषण किया जाएगा ताकि यह जाना जा सके कि गांधीवादी ग्राम स्वराज की मूल अवधारणा को व्यवहार में क्यों नहीं लाया जा सका और किस प्रकार नानाजी देशमुख ने इसे पुनर्परिभाषित कर व्यावहारिक मॉडल प्रस्तुत किया।

इस शोध में एक विशेष केस स्टडी के रूप में *चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय* और *Deendayal Research Institute* द्वारा संचालित चित्रकूट मॉडल का चयन किया गया है। यह मॉडल ग्रामीण विकास की एक ऐसी प्रयोगशाला है, जहाँ नानाजी देशमुख के सिद्धांतों को सामाजिक जीवन में लागू किया गया। केस स्टडी के अंतर्गत संस्था की योजनाओं, क्रियान्वयन प्रक्रियाओं, ग्रामीण सहभागिता, महिला सशक्तिकरण, कौशल विकास, शिक्षा और स्वच्छता के क्षेत्र में उपलब्ध उपलब्धियों का विश्लेषण किया जाएगा। इस मॉडल की तुलना पारंपरिक सरकारी योजनाओं से की जाएगी ताकि यह मूल्यांकन किया जा सके कि किस स्तर पर सरकारी योजनाएं ग्राम स्वराज की अवधारणा से भटक गईं और कैसे चित्रकूट मॉडल ने ग्राम्य जीवन को सशक्त किया। तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से शोध यह स्थापित करने का प्रयास करेगा कि गांधीवादी दर्शन की वास्तविकता को नानाजी देशमुख ने कैसे सामाजिक और संस्थागत ढाँचे के माध्यम से साकार किया। यह अध्ययन गुणात्मक डेटा की व्याख्या पर आधारित रहेगा, जिसमें सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों की गहराई से विवेचना की जाएगी, जिससे शोध निष्कर्ष सामाजिक नीतियों के निर्माण में सार्थक योगदान दे सकें।

गांधी का ग्राम स्वराज: सिद्धांत और उद्देश्य

गांधीजी का ग्राम स्वराज का विचार केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक, आर्थिक, और नैतिक दर्शन था। *'हिन्द स्वराज' (1909)* में गांधीजी ने भारत के वास्तविक पुनर्निर्माण की दिशा गांवों से शुरू करने पर बल दिया। उनके अनुसार, भारत की आत्मा गांवों में निवास करती है और जब तक गांव स्वावलंबी, स्वशासी और नैतिक रूप से समृद्ध नहीं होंगे, तब तक भारत का स्वराज अधूरा रहेगा।

गांधीजी के ग्राम स्वराज के मूल सिद्धांतों में विकेंद्रीकरण, आत्मनिर्भरता, स्थानीय संसाधनों का उपयोग, सामाजिक समानता, और नैतिक मूल्यों पर आधारित जीवन शामिल हैं। उन्होंने आधुनिकता, मशीनों, और केंद्रीकृत सत्ता के विरुद्ध चेतावनी देते हुए ग्राम-आधारित जीवनशैली को अधिक स्वाभाविक और टिकाऊ बताया। ग्राम स्वराज का उद्देश्य गांवों

को केवल राजनीतिक रूप से स्वतंत्र बनाना नहीं, बल्कि उन्हें आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक रूप से आत्मनिर्भर और नैतिक बनाना था।

गांधीजी का *'रचनात्मक कार्यक्रम'* इस विचार को व्यवहार में लाने की योजना थी, जिसमें खादी, ग्रामोद्योग, हरिजन सेवा, प्राथमिक शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, और ग्राम पंचायत की भूमिका जैसे तत्व शामिल थे। उनका मानना था कि सत्ता का वास्तविक विकेंद्रीकरण तभी संभव है जब गांव स्वयं निर्णय लेने, कार्यान्वयन और मूल्यांकन करने में सक्षम हों। इस प्रकार, गांधी का ग्राम स्वराज एक ऐसा आदर्श था जिसमें स्वतंत्रता, सादगी, श्रम, नैतिकता और समुदाय आधारित विकास का संतुलन निहित था।

नानाजी देशमुख की वैचारिक प्रेरणा: गांधी से संवाद

नानाजी देशमुख, जिन्हें आधुनिक भारत में ग्राम विकास और आत्मनिर्भरता का अग्रदूत माना जाता है, गांधीजी की ग्राम स्वराज की अवधारणा से गहराई से प्रभावित थे। उन्होंने गांधी के विचारों को केवल सैद्धांतिक रूप में नहीं अपनाया, बल्कि उन्हें धरातल पर उतारने का प्रयास किया। नानाजी का मानना था कि गांधीजी का ग्राम स्वराज भारतीय समाज के लिए आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना स्वतंत्रता संग्राम के समय था।

नानाजी देशमुख का गांधीजी से कोई प्रत्यक्ष संवाद नहीं रहा, लेकिन उन्होंने गांधी साहित्य का गंभीर अध्ययन किया और उसे अपने सामाजिक कार्यों का मूल आधार बनाया। *Constructive Programme* को उन्होंने एक "क्रियात्मक रोडमैप" के रूप में अपनाया, जिसके अनुसार उन्होंने अपने सामाजिक आंदोलनों की दिशा तय की। नानाजी ने यह समझा कि ग्राम स्वराज के लिए केवल सरकार की योजनाओं पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है, बल्कि समुदाय की भागीदारी और आत्मिक चेतना का जागरण आवश्यक है।

नानाजी ने चित्रकूट में **दीनदयाल अनुसंधान संस्थान** की स्थापना की और वहाँ 'समग्र ग्राम विकास मॉडल' लागू किया। यह मॉडल गांधीजी के विचारों का ही व्यावहारिक रूप था, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, जैविक कृषि, महिला सशक्तिकरण, स्वच्छता, और ग्रामोद्योग पर विशेष बल दिया गया। उन्होंने कहा था कि "गांव तभी बदलेंगे जब गांववाले स्वयं चाहें।" यह विचार गांधी के 'स्वराज' के आत्म-प्रेरणा सिद्धांत से मेल खाता है।

नानाजी का गांधी से वैचारिक संवाद उनके जीवन कार्यों और दृष्टिकोण में परिलक्षित होता है। वे राजनीति से संन्यास लेकर समाजसेवा में जुट गए, ठीक वैसे ही जैसे गांधीजी ने व्यक्तिगत सेवा को सर्वोपरि माना था। उन्होंने भ्रष्टाचार-विहीन, विकेंद्रीकृत और नैतिक शासन की परिकल्पना को चित्रकूट में साकार करने का प्रयास किया। उनका यह विचार कि "देश का विकास तभी संभव है जब गांव आत्मनिर्भर हों," गांधी के उस विचार का ही विस्तार था कि "भारत की आत्मा गांवों में बसती है।"

इस प्रकार, नानाजी देशमुख ने गांधी के ग्राम स्वराज को एक सैद्धांतिक विचार से क्रियात्मक मॉडल में रूपांतरित किया और यह दिखाया कि भारत के ग्रामीण पुनर्निर्माण की कुंजी आज भी गांधीजी के विचारों में निहित है।

चित्रकूट मॉडल: ग्राम स्वराज की प्रयोगशाला

चित्रकूट मॉडल नानाजी देशमुख द्वारा स्थापित एक ऐसा अभिनव प्रयोग है, जिसे उन्होंने गांधीवादी ग्राम स्वराज की अवधारणा को व्यवहार में उतारने के लिए चुना। यह मॉडल न केवल ग्राम विकास की एक सैद्धांतिक योजना है, बल्कि एक जीवंत प्रयोगशाला भी है, जिसमें ग्रामीण जीवन के हर पहलू को शामिल करते हुए समग्र विकास सुनिश्चित किया गया है। 1991 में सक्रिय राजनीति से संन्यास लेने के बाद नानाजी ने मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश की सीमा पर स्थित चित्रकूट को अपनी कर्मभूमि के रूप में चुना। उन्होंने यहाँ *Deendayal Research Institute (DRI)* के माध्यम से 'संपूर्ण ग्राम विकास' की अवधारणा पर कार्य करना शुरू किया।

चित्रकूट मॉडल की मूल अवधारणा 'समरस ग्राम', 'आत्मनिर्भर ग्राम', और 'नैतिक ग्राम' पर आधारित है। इस मॉडल में शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका, जल प्रबंधन, जैविक खेती, महिला सशक्तिकरण, कौशल प्रशिक्षण और आत्म-प्रेरणा को एकीकृत रूप से लागू किया गया है। गांवों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु स्थानीय संसाधनों के अधिकतम उपयोग और मानव संसाधन के विकास पर बल दिया गया। उदाहरण के तौर पर, *Gramodaya Vidyapeeth* के माध्यम से ग्रामीण युवाओं को तकनीकी, शैक्षणिक और उद्यमिता प्रशिक्षण दिया गया ताकि वे अपने गांव में ही रोजगार सृजित कर सकें। इसी तरह महिलाओं के लिए *Mahila Udyamita Kendras* बनाए गए, जहाँ उन्हें हस्तशिल्प, कढ़ाई, जैविक खाद निर्माण आदि के प्रशिक्षण दिए गए।

इस मॉडल की विशेषता इसकी *जनभागीदारी आधारित कार्यप्रणाली* है। हर योजना, निर्णय और कार्यान्वयन में ग्रामीणों की सक्रिय भूमिका सुनिश्चित की जाती है। पंचायतें, युवा मंडल, महिला मंडल, और ग्राम समितियाँ सभी स्तर पर सामूहिक निर्णय लेती हैं। चित्रकूट मॉडल में कोई सरकारी अनुदान या बाहरी सहायता पर निर्भरता नहीं रखी गई; बल्कि समाज के सहयोग से संसाधन एकत्रित कर 'स्वावलंबन' को व्यवहार में उतारा गया।

DRI द्वारा 500 से अधिक गांवों में किए गए हस्तक्षेपों के सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं – विद्यालयों में नामांकन और उपस्थिति में वृद्धि, साफ-सफाई में सुधार, पेयजल और शौचालय सुविधाओं में बढ़ोत्तरी, और सबसे महत्वपूर्ण, आत्मसम्मान एवं सामाजिक समरसता का विकास। कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने इस मॉडल को *best practice* के रूप में मान्यता दी है।

चित्रकूट मॉडल इस दृष्टि से गांधीवादी ग्राम स्वराज की सच्ची प्रयोगशाला है, जहाँ सत्ता का विकेंद्रीकरण, सामूहिक नेतृत्व, नैतिकता आधारित प्रशासन, और सामाजिक पुनर्निर्माण की वास्तविक झलक मिलती है। यह मॉडल न केवल भारत के लिए, बल्कि विकासशील विश्व के अन्य ग्रामीण क्षेत्रों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करता है।

समकालीन ग्रामीण नीति निर्माण में नानाजी देशमुख की प्रासंगिकता

नानाजी देशमुख का ग्राम विकास मॉडल आज के भारत की ग्रामीण नीति निर्माण में अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरणादायक सिद्ध हो रहा है। जिस प्रकार उन्होंने विकेंद्रीकरण, आत्मनिर्भरता, और सामुदायिक भागीदारी पर आधारित ग्राम स्वराज की कल्पना को व्यवहार में उतारा, वह आज की अनेक सरकारी योजनाओं और नीतिगत पहलों में परिलक्षित होता है। *नानाजी के दृष्टिकोण को महज ऐतिहासिक नहीं, बल्कि समकालीन समस्याओं का समाधान देने वाला व्यावहारिक दर्शन माना जाना चाहिए।*

नवभारत निर्माण में जब 'स्मार्ट विलेज', 'आत्मनिर्भर भारत', 'डिजिटल ग्राम' या 'स्वच्छ भारत मिशन' जैसी योजनाएँ लागू की जाती हैं, तो इनमें नानाजी देशमुख के चित्रकूट मॉडल के तत्त्व स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। उन्होंने जो बिंदु दशकों पहले चित्रकूट में कार्यान्वित किए — जैसे स्थानीय नेतृत्व का निर्माण, ग्रामीण शिक्षा का सुदृढ़ीकरण, स्वास्थ्य सेवाओं का विकेंद्रीकरण, और जैविक कृषि को बढ़ावा — आज नीति आयोग (NITI Aayog) जैसी संस्थाएं इन्हें राष्ट्रीय विकास के एजेंडे के रूप में स्वीकार कर रही हैं।

2019 में भारत सरकार ने नानाजी देशमुख की जन्मशती पर उन्हें मरणोपरांत *'भारत रत्न'* से सम्मानित किया और उनके नाम पर ग्रामीण विकास के लिए शोध और नीति निर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए *नानाजी देशमुख ग्रामीण विकास अध्ययन केंद्र* की स्थापना की। इससे यह संकेत मिलता है कि सरकार स्वयं उनके विचारों को नीति निर्माण में सम्मिलित करने को प्रतिबद्ध है। *NITI Aayog* की रणनीतिक रिपोर्ट *"Strategy for New India @75"* में भी चित्रकूट मॉडल का हवाला देते हुए सामुदायिक भागीदारी, ग्रामोद्योग और सूक्ष्म उद्यमों के महत्त्व को रेखांकित किया गया है।

आज जब ग्रामीण भारत गहरी असमानताओं, युवा बेरोजगारी, खेती की संकटग्रस्त स्थिति और पलायन जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब नानाजी का दृष्टिकोण व्यावहारिक समाधान के रूप में सामने आता है। उनका यह विचार कि "विकास ऊपर से नहीं, नीचे से शुरू होना चाहिए" — आज की लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में स्थानीय निकायों

(पंचायती राज) के सशक्तिकरण की आवश्यकता को रेखांकित करता है। वर्तमान नीति-निर्माताओं के लिए यह समझना अनिवार्य है कि योजना निर्माण तभी सफल हो सकती है जब वह ग्राम-स्तर की आवश्यकताओं, मूल्यों और संस्कृति को समझते हुए नीचे से ऊपर की दिशा में बने।

इस प्रकार, नानाजी देशमुख की सोच केवल ग्राम स्वराज की परिकल्पना तक सीमित नहीं है, बल्कि आज की नीतिगत और प्रशासनिक प्रणाली को आत्मनिर्भर, उत्तरदायी और लोक-आधारित बनाने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करती है। उनका दृष्टिकोण समकालीन ग्रामीण भारत के लिए एक वैचारिक प्रेरणा और व्यावहारिक मॉडल दोनों रूपों में मूल्यवान है

निष्कर्ष (Conclusion)

ग्राम स्वराज की अवधारणा भारतीय चिंतन की आत्मा रही है, जिसे महात्मा गांधी ने औपनिवेशिक सत्ता के प्रतिपक्ष में एक नैतिक, सामाजिक और आर्थिक विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया था। स्वतंत्र भारत में गांधीजी के ग्राम स्वराज को व्यापक स्वीकृति तो मिली, परंतु इसे व्यावहारिक रूप से लागू करने में अपेक्षित सफलता नहीं मिली। इसका प्रमुख कारण रहा योजनाओं का केंद्रीकृत स्वरूप, ग्रामीण सहभागिता की कमी, और आत्मनिर्भरता के स्थान पर सरकारी आश्रय की प्रवृत्ति। इन विफलताओं के मध्य नानाजी देशमुख का चित्रकूट मॉडल एक सफल प्रयोग के रूप में उभरा, जिसने गांधीवादी सिद्धांतों को व्यावहारिक धरातल पर उतारा।

नानाजी देशमुख ने यह सिद्ध किया कि ग्राम स्वराज कोई आदर्शवादी स्वप्न नहीं, बल्कि एक क्रियाशील विकास मॉडल हो सकता है, बशर्ते उसमें जनभागीदारी, आत्मबल, और नैतिक नेतृत्व का समावेश हो। उन्होंने ग्राम स्वराज को केवल सत्ता के विकेंद्रीकरण से जोड़कर नहीं देखा, बल्कि उसे आत्मनिर्भर, स्वशासी और संस्कृति-सम्मत जीवनशैली के रूप में विकसित किया। चित्रकूट में उनके प्रयोग ने शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक समरसता के क्षेत्र में जो परिवर्तन लाए, वे यह सिद्ध करते हैं कि गांधी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने स्वतंत्रता आंदोलन के समय थे।

आज जब भारत 21वीं सदी के आर्थिक और तकनीकी विकास के साथ-साथ सामाजिक असमानताओं और ग्रामीण-शहरी विभाजन जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब नानाजी देशमुख का दृष्टिकोण एक वैकल्पिक रास्ता सुझाता है — ऐसा रास्ता जो स्थानीय संसाधनों, सामुदायिक भागीदारी और सांस्कृतिक आत्मबोध के माध्यम से समावेशी विकास को संभव बना सकता है। ग्राम स्वराज का यह आधुनिक संस्करण न केवल नीति निर्माताओं के लिए एक दृष्टि प्रदान करता है, बल्कि यह युवाओं, शिक्षकों, और सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी प्रेरित करता है कि वे गांवों को भारत की आत्मा मानते हुए उनके पुनर्निर्माण के लिए कार्य करें।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि नानाजी देशमुख का ग्राम स्वराज दृष्टिकोण गांधीजी के दर्शन का जीवंत और व्यावहारिक विस्तार है, जो समकालीन भारत के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में न केवल प्रासंगिक है, बल्कि नीति निर्माण के लिए आवश्यक भी।

संदर्भ

1. Gandhi, M. K. (1909). *Hind Swaraj*. Navjivan Publishing House.
2. Gandhi, M. K. (1945). *Constructive Programme: Its Meaning and Place*. Navajivan Publishing House.
3. Deshmukh, N. (1996). *Rashtra Nirmaan ke Path*. Deendayal Research Institute.
4. Deshmukh, N. (2005). *Chitrakoot Experiment*. Deendayal Research Institute.
5. Planning Commission of India. (2001). *Report of the Task Force on Rural Development*. Government of India. Retrieved from https://planningcommission.gov.in
6. NITI Aayog. (2018). *Strategy for New India @75*. Government of India. Retrieved from https://www.niti.gov.in
7. Sharma, R. (2012). Relevance of Gandhian model in modern rural governance. *Journal of Rural Studies*, 28(3), 45–56.
8. Verma, S. (2017). Gram Vikas: Ek Atma-Kendrit Drishtikon. *Indian Journal of Social Development*, 15(2), 121–134.
9. Kumar, A. (2020). Impact of decentralized rural governance in India. *International Journal of Governance and Development*, 5(1), 33–49.
10. Mishra, P. (2021). Reimagining rural India through integral humanism. *Journal of Indian Thought*, 12(4), 67–80.
11. Baviskar, B. S. (1995). *Grassroots democracy and people's empowerment: An Indian perspective*. Indian Journal of Public Administration, 41(3), 335–350.
12. Jodhka, S. S. (2002). *Nation and village: Images of rural India in Gandhi, Nehru and Ambedkar*. Economic and Political Weekly, 37(32), 3343–3353.
13. Rao, M. G. (2007). *Rural development and decentralized governance in India*. Indian Journal of Economics and Development, 3(1), 15–22.
14. Mahajan, G. (2009). *Civil society and its role in good governance: Participatory development and decentralization*. Journal of Social and Economic Development, 11(2), 139–156.
15. Singh, K. (2009). *Rural development: Principles, policies and management* (3rd ed.). SAGE Publications.
16. Chakrabarti, A. (2011). *Revisiting Gandhi: Gram Swaraj and sustainable development*. Journal of Human Values, 17(2), 111–123. https://doi.org/10.1177/097168581101700202
17. Banerjee, A. V., & Duflo, E. (2012). *Poor economics: A radical rethinking of the way to fight global poverty*. Random House India.
18. Tiwari, R. (2014). *Nehruvian vs Gandhian rural development: A comparative policy approach*. Social Change, 44(3), 393–408.
19. Government of India. (2017). *Report on Doubling Farmers' Income by 2022*. Ministry of Agriculture & Farmers Welfare. Retrieved from https://agricoop.gov.in
20. DRI – Deendayal Research Institute. (2019). *Annual Report on Chitrakoot Development Model*. Chitrakoot: DRI Publications